विचार बिन्दु

जहाँ नक़ल है वहां खाली दिखावट होगी, जहाँ खाली दिखावट है वहां मूर्खता होगी। –जॉन्सन

सदर्न देहली फोल्ड पॉलिमेटेलिक अम्बाजी-डेरी-बसंतगढ़ बेल्ट खनिजों की संभावनाभरा बेल्ट

यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं मानी जा सकती कि राजस्थान खनिजों का म्यूजियम है। राजस्थान प्रधान और अप्रधान खनिज का खजाना है तो हालिया खोजों से राजस्थान में क्रिटिकल और स्ट्रेटेजिक मिनरल्स के जिस तरह से भण्डार मिल रहे हैं उससे राज्य और केन्द्र सरकार दोनो ही उत्साहित है। हालिया खोजों में सिरोही आबुरोड के डेरी व आसपास के क्षेत्र में तांबा, शीशा, जस्ता और सह खनिज भण्डार के आरंभिक संकेत मिलना भी अपने आपमें उत्साहजनक है। आरंभिक संकेतों को देखते हुए मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा जो स्वयं खान मंत्री भी है के दिशानिर्देशों के अनुसरण में खान विभाग ने आबुरोड के डेरी, बंसतगढ व आसपास के क्षेत्र में अतिमहत्वपूर्ण खनिज कॉपर, लेड, जिंक और एसोसिएटेड खनिजों के भण्डार की विपुल संभावनाओं को देखते हुए इस क्षेत्र में विस्तृत खोज एवं खनन शुरु कराने की कार्ययोजना तैयारी अपने आप में महत्वपूर्ण हो जाती है। अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस श्रीमती अपर्णा अरोरा ने इस संबंध में पिछले दिनों आरएसएमएम के प्रबंध निदेशक, खान एवं आरएसएमएम व जीएमआरआईसी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की और भावी रणनीति पर चर्चा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

राजस्थान में सदर्न देहली फोल्ड पॉलिमेटेलिक बेल्ट अम्बाजी-डेरी-बसंतगढ़ व आसपास का इलाका में तांबा, जस्ता, लेड, और इनसे जुड़े खनिजों विपुल संभावनायुक्त बेल्ट के रुप में सामने आ रहा है और इस क्षेत्र में अब इन संकेतों को देखते हुए जल्द से जल्द इस इलाके में इन खनिजों के वास्तविक आकलन के लिए एक्सप्लोरेशन कार्य आरंभ करते हुए खनिज भण्डारों का वास्तविक आंकलन करना होगा।

राजस्थान प्रधान खनिज ब्लॉकों की नीलामी में आज देश में पहले स्थान पर आ गया है तो इस वित्तीय वर्ष में ही 60 से अधिक प्रधान खनिज ब्लॉकों की नीलामी की कार्ययोजना बनाकर क्रियान्वयन किया जा रहा है। राजस्थान मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी में देश में अव्वल होने के साथ ही दुर्लभ खनिज रेयर अर्थ एलिमेंट्स का एक्सप्लोरेशन लाइसेंस जारी करने वाला देश का पहला प्रदेश बन गया है। सीकर के खण्डेला के पास रोहेला में यूरेनियम के खनन का कार्य जल्द ही शुरु होने की तैयारी है।

इधर राजस्थान में सदर्न देहली फोल्ड पॉलिमेटेलिक बेल्ट अम्बाजी-डेरी-बसंतगढ़ व आसपास का इलाका में तांबा, जस्ता, लेड, और इनसे जुड़े खनिजों विपुल संभावनायुक्त बेल्ट के रुप में सामने आ रहा है और इस क्षेत्र में अब इन संकेतों को देखते हुए जल्द से जल्द इस इलाके में इन खनिजों के वास्तविक आकलन के लिए एक्सप्लोरेशन कार्य आरंभ करते हुए खनिज भण्डारों का वास्तविक आकलन करना होगा। राज्य सरकार ने इसके लिए राजस्थान माइंस एवं मिनरल्स आरएसएमएम को तत्काल आवश्यक कदम उठाने के निर्देश देना राज्य सरकार की गंभीरता को दर्शाता हैं। डेरी, बंसतगढ व आसपास के क्षेत्र में अब तक के उपलब्ध एक्सप्लोरेशन परिणामों के डेटा साझा करते हुए विशेषज्ञ संस्थाओं से विश्लेषण कराये जाने का निर्णय किया जा रहा है। राज्य सरकार ने अपनी गंभीरता दर्शा दी है अब इसके लिए आरएसएमएम को एक्सप्लोरेशन मैनेजमेंट कंसलटेंस की भी सहायता लेते हुए आगे बढ़ना होगा। इस बेल्ट में कॉपर के साथ ही लेड-जिंक व एसोसिएटेड खनिजों के भण्डार है। इन खनिजों के संभावित भण्डारों के आकलन और उसके एक्सप्लोरेशन व खनन से देश और प्रदेश की इकोनोमी को बूस्टअप मिल सकेगा। भूमिगत खनन तकनीक से इस क्षेत्र में खनन कार्य होगा। खासबात यह है कि गुजरात में अंबाजी के आसपास के इलाके में गुजरात सरकार द्वारा पहले से ही खनन परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है। ऐसे में राजस्थान को भी तेजी से इस दिशा में कदम उठाने होंगे और खान विभाग की पहल को इस दिशा में सकारात्मक दिशा में बढ़ता कदम माना जाना चाहिए।

राज्य सरकार की गंभीरता केा इसी से समझा जा सकता है कि राजस्थान की अतरिक्त मुख्य सचिव माइंस अपर्णा अरोरा ने ना केवल गंभीरता दिखाई है बल्कि गुजरात सरकार की गुजरात मिनरल रिसर्च एण्ड इण्डस्ट्रीयल कंसलटेंसी के मुख्यकार्यकारी अधिकारी डॉ. डीके सिंहा और राज्य के वरिष्ट अधिकारियों के साथ प्रजेंटेशन के माध्यम से संभावनाओं को तलाशा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अंबाजी-डेरी-बसंतगढ़ क्षेत्र में खनिज खोज की आधुनिकतम तकनीकों से फर्दर एक्सप्लोरेशन कर खनिज भण्डारों और उनकी गुणवत्ता की सटीक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इलेक्ट्रोमेग्नेटिक सर्वे आदि तकनीक का उपयोग कर अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। उपलब्ध डेटा का विश्लेषण कराकर डेरी माइंस में खनन और एक्सप्लोरेशन दोनों कार्य एक साथ शुरु करने का सुझाव भी प्राप्त हुए हैं। डेरी-बसंतगढ़ ब्लॉक में कॉपर, लेड-जिंक व अन्य खनिजों के संकेत को देखते हुए आरएसएमएम इस क्षेत्र में तेजी से कदम बढ़ायेगा। आरएसएमएम के पास उपलब्ध डेटा का साझा कर विशेषज्ञ संस्थाओं से विश्लेषण कराया जाएगा ताकि महत्वपूर्ण खनिजों का खनन कार्य आरंभ किया जा सके।

आज देखा जाएं तो अमेरिका की नीति खनिजों को लेकर ही प्रभावित हो रही है। अमेरिका की नजर समूची दुनिया के खनिज क्षेत्रों की और है यही कारण है चाहे कनाडा हो या आइस लैंड, यूक्रेन हो या रुस और इसी तरह अन्य खनिज संपदा वाले देशों की और खनिज संपदा को लेकर दबाव बनाने में लगा हुआ है। यह भी सर्वविदित है कि चीन आज खनिज संपदा के कारण ही विश्व ताकत बना हुआ है। ऐसे में देश में और खासतौर से राजस्थान में उपलब्ध खनिज संपदा के खोज और खनन की राजस्थान सरकार की नीति की सराहना और जिस तेजी से माइनिंग सेक्टर में काम हो रहा है वह सराहनीय होने के साथ ही देशहित में भी है। इसे प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

डिग्री जेब में, ज्ञान शून्य: सबको पास करने की नीति और ए ग्रेडिंग का मायाजाल

इमारतें बुलंद और कागजों पर आंकड़े अव्वल, लेकिन धरातल पर दरकती बुनियादी सुविधाओं और खाली कक्षाओं के बीच दांव पर लगा है देश की युवा पीढ़ी का भविष्य।



प्रो.अशोक कुमार

किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसकी गगनचुंबी इमारतों, चौडे राजमार्गों या विशाल औद्योगिक ढांचों से नहीं, बल्कि उसकी कक्षाओं में गढ़े जाने वाले मस्तिष्कों से होता है। यह उक्ति शत-प्रतिशत सत्य है कि किसी देश को नष्ट करने के लिए परमाणु बम की आवश्यकता नहीं होती, बस उसकी शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर देना ही पर्याप्त है। दुर्भाग्यवश, आज भारत की शिक्षा प्रणाली एक ऐसे ही अदृश्य संकट और 'मायाजाल' में फंस चुकी है, जहाँ नीतियां तो आकाश छूने की बनती हैं, लेकिन धरातल पर बुनियादी ढांचे की जमीन भी दरक चुकी है। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था दो बड़े छलावों के बीच झूल रही है-एक तरफ परीक्षाओं में 'सबको पास' करने की आत्मघाती होड़ लगी है, तो दूसरी तरफ न्यूनतम बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित संस्थानों को 'ए-प्लस-प्लस' ठोडिंग बांटी जा रही है। कागजी आंकड़ों की इस चकाचौंध और जमीनी हकीकत के अंधेरे के बीच देश की युवा पीढ़ी का भविष्य दांव पर लगा है।

नीतियों का अंबार और क्रियान्वयन का अकाल

स्वतंत्रता के बाद से ही हमारे देश में शिक्षा सुधारों के नाम पर समितियों, आयोगों और नई नीतियों का अंबार लगा रहा है। कागजों पर हर नीति क्रांतिकारी और भविष्यवादी दिखाई देती है, लेकिन उन्हें जमीनी स्तर पर लागू करने और उसकी निगरानी करने वाले तंत्र का घोर अभाव है। आज भी देश के हजारों सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों में न पर्याप्त कमरे हैं, न छात्रों के बैठने के लिए बेंच और न ही पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षक। कई विद्यालयों में एक ही शिक्षक के भरोसे कई कक्षाएं चल रही हैं, तो कहीं विषय विशेषज्ञों का पूरी तरह अकाल है। इसके बावजूद, सरकारी रिपोर्टों और दस्तावेजों में सब कुछ 'सर्वश्रेष्ठ' दिखाई देता है। व्यवस्था ने 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' की जगह 'आंकड़ों की बाजीगरी' को अपना अंतिम लक्ष्य बना लिया है।

'ए-प्लस-प्लस' ठोडिंग और फर्जीवाड़े का तंत्र

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्थिति और भी अधिक विडंबनापूर्ण है। जिन महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में साल भर नियमित कक्षाएं नहीं लगतीं, जहाँ प्रयोगशालाएं धूल फांक रही हैं और पुस्तकालयों में ताले लटके हैं, उन्हें भी मूल्यांकन के नाम पर 'ए' और 'ए-प्लस-प्लस' जैसी शीर्ष ग्रेडिंग मिल रही है। यह किसी आश्चर्य से कम नहीं कि जिन संस्थानों में छात्रों की वास्तविक उपस्थिति 30 से 40 प्रतिशत भी नहीं रहती, वहां रजिस्टरों में शत-प्रतिशत हाजिरी दर्ज होती है। छात्रवृत्ति और सरकारी अनुदान के लालच में फर्जी नामांकन और फर्जी उपस्थिति का यह खेल खुलेआम चल रहा है। बिना कक्षाएं लगे डिठियां बांटी जा रही हैं। यह स्थिति समाज में एक ऐसे वर्ग को जन्म दे रही है, जिसके पास प्रमाण-पत्रों का पुलिंदा तो है, लेकिन ज्ञान, कौशल और बौद्धिक क्षमता के नाम पर शून्य है।

किसी को फेल न करने' की नीति

शिक्षा के गिरते स्तर के पीछे 'किसी को फेल न करने' की नीति ने आग में घी का काम किया है। परीक्षा प्रणाली को इतना लचीला और सतही बना दिया गया है कि अब अनुत्तीर्ण होना लगभग असंभव हो गया है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च कक्षाओं तक बिना कुछ सीखे अगली कक्षा में प्रोन्नत कर देना बच्चों के साथ भलाई नहीं, बल्कि उनके भविष्य के साथ सबसे बड़ा खिलवाड़ है। जब विद्यार्थी को यह पता होता है कि बिना पढ़े और बिना कक्षा में गए भी वह पास हो ही जाएगा, तो उसके भीतर से सीखने की ललक और परिश्रम करने की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है। यह नीति एक ऐसी कमजोर नींव तैयार कर रही है, जिस पर भविष्य में किसी भी मजबूत राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं है।

कोरी डिठियां, कोचिंग माफिया और 'गिग इकॉनमी' का भ्रम

महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के परिसर आज वीरान पड़े हैं क्योंकि विद्यार्थी वहां जाने के बजाय निजी कोचिंग संस्थानों की ओर भाग रहे हैं। इसके पीछे सीधा कारण यह है कि उच्च शिक्षण संस्थानों का पाठ्यक्रम आज की व्यावहारिक और औद्योगिक आवश्यकताओं से पूरी तरह कट चुका है। दूसरी ओर, 'स्किल डेवलपमेंट' (कौशल विकास) के नाम पर नए पाठ्यक्रम तो शुरू कर दिए गए हैं, लेकिन विडंबना यह है कि उन आधुनिक विषयों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षक ही उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में कौशल विकास भी केवल औपचारिकता बनकर रह गया है।

इस शैक्षिणक शून्यता ने समाज में एक बेहद खतरनाक मानसिकता को जन्म दिया है। आज युवाओं के मन में यह बात गहराई तक बैठा दी गई है कि "उच्च शिक्षा या डिठियां हासिल करके क्या करोगे? रोजगार तो मिलना नहीं है। इससे बेहतर है कि आठवीं-दसवीं पास करो और किसी डिलीवरी कंपनी (जैसे जोमैटो, ब्लिंकिट आदि) में भर्ती हो जाओ या कोई छोटा-मोटा काम शुरू कर लो।" निस्संदेह कोई भी काम छोटा नहीं होता, लेकिन एक युवा राष्ट्र की बौद्धिक और रचनात्मक ऊर्जा को केवल 'डिलीवरी बॉय' बनने तक सीमित कर देना देश की प्रतिभा के साथ एक क्रूर मजाक है। यह स्थिति युवाओं को उच्च लक्ष्यों, अनुसंधान और नवाचार से विमुख कर रही है।

मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति से कटती शिक्षा

रोजगारपरक शिक्षा के अंधानुकरण में हम शिक्षा के मूल उद्देश्य को ही भूलते जा रहे हैं। आज पाठ्यक्रमों से इतिहास, साहित्य, कला और यहाँ तक कि पर्यावरण जैसे अत्यंत संवेदनशील और आवश्यक विषयों को या तो हटाया जा रहा है या उन्हें महत्वहीन बनाया जा रहा है। यह समझना आवश्यक है कि विज्ञान और तकनीक हमें सुविधाएं दे सकते हैं, लेकिन साहित्य, कला और इतिहास हमें मनुष्य बनाते हैं। ये विषय हमारे भीतर संवेदनशीलता, तार्किकता और नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं। इसी प्रकार, पर्यावरण की शिक्षा हमारे अस्तित्व और आने वाली पीढ़ियों के जीवन से जुड़ी है। यदि हम अपनी कक्षाओं से इन विषयों को बाहर कर देंगे, तो हम संवेदनशील नागरिक नहीं, बल्कि केवल आदेशों का पालन करने वाली मशीनें तैयार करेंगे।

सुधार के ठोस और व्यावहारिक सुझाव

इस भयावह और निराशाजनक स्थिति को बदलने के लिए केवल सतही बयानबाजी पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था की जड़ों में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

शिक्षकों की शत-प्रतिशत नियुक्ति और जवाबदेही: देश के हर विद्यालय और महाविद्यालय में योग्य व प्रशिक्षित शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति युद्धस्तर पर की जाए। शिक्षकों को जनगणना, चुनाव और अन्य गैर-शैक्षिणक कार्यों से पूरी तरह मुक्त रखा जाए ताकि वे अपना पूरा समय शिक्षण को दे सकें। साथ ही, कक्षाओं के नियमित संचालन के प्रति उनकी सीधी जवाबदेही तय हो। **निरीक्षण और ठोडिंग में पारदर्शिता:** शिक्षण संस्थानों की ठोडिंग और निरीक्षण की प्रक्रिया को स्थानीय प्रभाव से मुक्त कर स्वतंत्र और निष्पक्ष एजेंसियों के हाथों में सौंपा जाए। फर्जी हाजिरी लगाने वाले और बिना कक्षाएं संचालित किए डिठियां बांटने वाले संस्थानों की मान्यता तत्काल रद्द की जाए और दोषियों पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई हो। **कौशल और ज्ञान का संतुलन:** किसी भी नए कौशल-आधारित पाठ्यक्रम को लागू करने से पहले उन्हें पढ़ाने वाले प्रशिक्षकों को तैयार किया जाए और प्रयोगशालाओं का निर्माण हो। इसके साथ ही, कला, साहित्य, इतिहास और पर्यावरण जैसे विषयों को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाए रखा जाए ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण और मानवीय विकास सुनिश्चित हो सके।

योग्यता आधारित मूल्यांकन प्रणाली: 'सबको पास करने' की नीति की समीक्षा कर एक संतुलित और योग्यता आधारित मूल्यांकन प्रणाली लागू की जाए। यदि कोई छात्र पढ़ाई में कमजोर है, तो उसे बिना सीखे अगली कक्षा में धकेलने के बजाय अतिरिक्त उपचारात्मक कक्षाओं के माध्यम से उसका स्तर सुधारा जाए।

उच्च स्तरीय रोजगार और अनुसंधान को बढ़ावा: युवाओं को केवल अस्थायी और असंगठित क्षेत्र (गिग इकॉनमी) के भरोसे छोड़ने के बजाय, उच्च शिक्षा को उद्योगों और अनुसंधान से जोड़ा जाए। स्टार्टअप और नवाचार के लिए केवल नारे न देकर जमीनी स्तर पर पूंजी और मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाए।

प्रशासनिक और सामाजिक भागीदारी: सरकारी शिक्षा तंत्र की दशा सुधारने का सबसे प्रभावी उपाय यह है कि जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों और सरकारी कर्मचारियों के बच्चों के लिए सरकारी विद्यालयों में पढ़ना अनिवार्य किया जाए। जिस दिन नीति निर्माताओं के अपने बच्चे इन स्कूलों में जाएंगे, उसी दिन से कक्षाओं, बेंचों और शिक्षकों की स्थिति रातों-रात सुधर जाएगी।

उपसंहार

शिक्षा कोई सरकारी खैरात या कागजी औपचारिकता नहीं, बल्कि किसी भी राष्ट्र के सुरक्षित भविष्य का सबसे बड़ा निवेश है। आज हमें यह तय करना होगा कि हमें केवल 'ए-प्लस-प्लस' ठोडिंग वाले खोखले संस्थान और बेरोजगार डिठीधारियों की भीड़ चाहिए, या फिर ज्ञानवान, संवेदनशील और आत्मनिर्भर नागरिक। यदि आज हमने कागजी आंकड़ों के इस मायाजाल से बाहर निकलकर अपनी कक्षाओं, शिक्षकों और पाठ्यक्रमों की सुध नहीं ली, तो इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। अब समय आ गया है कि शिक्षा नीतियां फाइलों के पन्नों से बाहर निकलकर स्कूलों की दीवारों और छात्रों के उज्ज्वल भविष्य में दिखाई दें।

प्रोफेसर अशोक कुमार
पूर्व कुलपति कानपुर एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय

नांच ना आवै, आंगन टेढ़ा

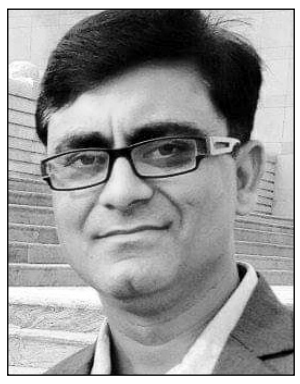

अनुराग शुक्ला

2026 में आए विश्व बैंक के नए अनुमान के अनुसार, 2011-2023 के बीच लगभग 49.6 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले। वहीं आईएमएफ ने भी कहा कि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की पूँजी पर्याप्तता, निगरानी और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है। इसी आरबीआई की माने तो बैंको की स्थिति में बड़ा सुधार हुआ है। ग्रॉस एनपीए (नॉन पर्फार्मिंग एसेट्स) 2018 में 11.18प्रतिशत से गिरकर अब 2025 में 2.2 प्रतिशत तक पहुंच गया है। नेट एनपीए 2018 में 5.94 प्रतिशत था, 2025 में 0.5 तक गिर गया है। कैपिटल एडेक्वेसी रेशियो 2015 में 12.94 था, 2025 में 17.36 तक पहुँचा। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का व्यापार 2026 में 300 लाख करोड़ पार कर गया, और शुद्ध लाभ 17 बढ़ा गया है।

ये तो भारतीय अर्थव्यवस्था का एक पहलू है जो रिजर्व बैंक से लेकर विश्वबैंक और आईएमएफ तक पेश कर रही है। वहीं देश के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी अपने हर विदेशी दौरे में दूसरी ही तस्वीर पेश करते हैं। कभी कहते है देश में आर्थिक सुनामी आने वाली है, कभी भारतीय अर्थव्यवस्था को डेड बता देते हैं। अपने हालिया अमरीका दौरे के दौरान उन्होंने अंग्रेजी में एक बयान दिया उसका हिंदी अनुवाद है सीधी बात यह है कि भारत आर्थिक आपदा में बैठा है। यह वास्तविकता है। इसे नज़रअंदाज़ किया जा सकता है, मीडिया इसे अनदेखा कर सकता है, लेकिन भारत में बेरोजगारी की बहुत बड़ी समस्या है और शिक्षा प्रणाली में भी बहुत बड़ी दिक्कत है। उनका दावा था कि ये समस्याएँ देश के भीतर दबा दी जाती हैं, इसलिए उन्हें बाहर भी बोलना ज़रूरी है।वहीं शिकागों में उन्होंने 2014 के चुनाव को ही फर्जी बता दिया।

उनकी रणनीति यह है कि वे भारत की छवि को सब ठीक है नहीं बताना चाहते, बल्कि यह दिखाना चाहते हैं कि देश में गंभीर समस्याएँ हैं और सरकार उन्हें नज़रअंदाज़ कर रही है। इससे वे अपने समर्थकों और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को यह संदेश देते हैं कि वे सच बोलने वाले नेता हैं

राहुल गांधी की जो भी रणनीति हो वो जाने अनजाने किसी सरकार नहीं देश की छवि को कमजोर कर रहे हैं। अब सवाल ये है कि ऐसा राहुल गांधी क्यों कह रहे हैं। दरअसल ये उनकी झल्लाहट है। उनके नेतृत्व में कांग्रोस करीब 100 चुनाव हार चुकी है, पर राहुल गांधी अभी भी आजादी के 20 साल बाद तक की कांग्रेस के छवि में ट्रैप हैं। उस समय कांग्रेस पंचायत से पार्लियामेंट तक वर्चस्व में थी, क्योंकि वह स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत, देशव्यापी संगठन और सामाजिक-वैचारिक गठबंधन की पार्टी थी।

कांग्रेस की सबसे बड़ी ताकत यह थी कि वह कई जातियों, धर्मों, क्षेत्रों और वर्गों को एक साथ रखने वाला सबका दल थी। आंतरिक मतभेद भी अक्सर पार्टी छोड़कर बाहर जाने के बजाय भीतर ही तय होते थे; इसलिए प्रतिस्पर्धा काफी हद तक कांग्रेस के भीतर ही रहती थी।

समय बदला तो देश की राजनीति बदली पर कांग्रेस नहीं बदल पाई। अब भी कांग्रेस में निर्णय लेने की शक्ति ऊपर यानी हाईकमान में ही केंद्रित रही, लेकिन राज्य, जिला और स्थानीय स्तर पर जवाबदेह, सक्षम और जन-आधार वाले नेतृत्व का निर्माण कम हुआ। कार्यकर्ता अक्सर किसी स्थानीय दबंग नेता या गुट के इर्द-गिर्द सीमित रह जाते हैं।

अगर नेता अपने विचार को ही सही समझता है और स्थानीय नेताओं, कार्यकर्ताओं या आलोचकों की बात को कम महत्व देता है, तो संगठन में भरोसा घटता है। राहुल गांधी अक्सर बड़े, वैचारिक और नैतिक तर्क देते हैं-संविधान, सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता, लोकतंत्र। पर वो अपने समर्थकों को महत्व नहीं देते। उनका अहं ब्रह्मास्मि का भाव उनके आस पास के घिरे लोगों से अलावा आम कार्यकर्ता को उनसे दूर कर देता है। नतीजा जनता उसे अकड या दूरी महसूस कर सकती है।

कई बार चर्चा कांग्रेस क्या करेगी की बजाय राहुल गांधी ने क्या कहा, कैसे कहा, कहाँ कहा बन जाती है। इससे पार्टी के कार्यकर्ता और स्थानीय नेता पीछे छट जाते हैं, और संगठन एक व्यक्ति की छवि पर निर्भर लगने लगता है।

राहुल गांधी का व्यवहार, संवाद शैली और नेतृत्व अहंकार जैसा लगता है। उनकी भाषा अक्सर संरचनात्मक अन्याय पर केंद्रित रहती है। ये तर्क बुद्धिजीवियों को प्रभावित करते हैं पर औसत मतदाता पर असर नहीं डालते। जब नेतृत्व एक परिवार के चारों ओर केंद्रित हो, तो कार्यकर्ताओं और नेताओं में यह धारणा बनती है कि विकल्प, पहल और पदोन्नित परिवार की स्वीकृति पर निर्भर है।

अगस्त 2020 में 23 वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने सोनिया गांधी को पत्र लिखा। इस समूह में सभी अनुभवी नेता थे। यह माँग थी कि नेतृत्व, टिकट और पदों के फैसले खुली सलाह-मशविरे से हों।

जी-23 के कई सदस्यों को बाद में विद्रोही कहा गया, और यूपी चुनाव के लिए बनाई गई समितियों में राज बब्बर और जितिन प्रसाद जैसे नेताओं को जगह तक नहीं मिली। यानी सुधार माँगने वालों को संगठन में सहभागी बनाने के बजाय उन्हें बाहर की ओर धकेला गया।

2022 में कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव हुआ, जिसमें खरगे ने शशि थरूर को हराया। खरगे गांधी परिवार की पसंद के तौर पर पेश किए गए। 2022 में खरगे के अध्यक्ष बनने के बाद सीडब्ल्यूसी को भंग कर एक 47-सदस्यीय स्टीयरिंग कमेटी बनाया गया, जिसमें सोनिया और राहुल गांधी भी थे। बाद में सीडब्ल्यूसी का चुनाव नहीं कराने का निर्णय लिया गया-यानी पार्टी के सबसे शक्तिशाली निकाय में भी चुनाव के बजाय नामांकन और नियुक्ति का रास्ता चला।

इससे साफ संदेश गया कि चुनाव औपचारिक है, असली सत्ता अब भी गांधी परिवार और उनके करीबी लोगों के पास है। इसके साथ ही राहुल गांधी के बार-बार चुनाव हारने से संदेश जाता है कि परिणाम की कीमत नहीं चुकानी पड़ती।

कांग्रेस का स्थाई संगठन नहीं बनता है, चुनाव के समय लोग जुटते हैं, पर चुनावों के बीच ज़मीनी कार्य, स्थानीय नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की निरंतर मौजूदगी नहीं बन पाती। संगठन एपिसोडिक बन जाता है, स्थायी नहीं।

उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश में 2022 विधानसभा चुनाव में प्रियंका गांधी वाडरा कांग्रेस को लीड कर रही थी। चुनाव के बाद कहा गया कि वो यूपी में ही रहेंगी पर कुछ दौरों के बाद प्रियंका गांधी वाडरा ने यूपी से दूरी बना ली। अब 2027 में फिर से सक्रिय होने वाली हैं।

परंपरगत संरचना, परिवर्तन के अभाव, लचर संगठन और पार्टी के बजाय परिवार के लॉयल नेताओं की वजह से कांग्रेस एक के बाद एक चुनाव, कुछ अपवादों के अलावा, हार रही है।

राहुल गांधी संगठन बनाने की मेहनत नहीं करना चाहते, पर शासन पर अपना नैसर्गिक हक समझते हैं। सत्ता ना मिले तो झल्लाते हैं। शायद राहुल गांधी अपनी यही झल्लाहट विदेशी मंच पर निकालते हैं।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार, 24 नवम्बर, 2026

कार्तिक मास शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, मंगलवार, विक्रम सम्वत 2083, कृत्तिका नक्षत्र, रात्रि 11.25 तक, परिद्य योग सायं 4.06 तक, विष्टिकरण दिन 10.03 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 7.25 पर वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मेष, मंगल-सिंह, बुध-तुला, गुरु-सिंह, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में संचार करेगा।

आज सवार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 11.25 तक है। कुमार योग रात्रि 11.25 से आरम्भ होगा। आज भद्रा दिन 10.03 तक है। आज कार्तिक पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत, देव दिवाली, गुरु नानक जयंती है। आज कार्तिक स्नान, भीष्म पंचक व्रत समाप्त होंगे।

श्रेष्ठ चौघडिया - चट 9.36 से 10.54 तक, लाभ-अमृत 10.54 से 1.32 तक शुभ 2.51 से 4.10 तक।

राहुकाल - 3.00 से 4.30 तक सूर्योदय 6.57 सूर्यास्त 5.30

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भाग-दौड़ रहेगी।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों-रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

घर-परिवार के कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज समय अर्नगल कार्यों में खराब हो सकता है।

कर्क

आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आज नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सफलता मिल सकती है। आज घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या

कन्या- नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ

घर परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते है। शुभ कार्य के संबंध में यात्रा संभव है। आज नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

सालों से झाड़ियों में छिपी बावड़ी और छतरी को नई पहचान, तीन दिन के अथक श्रमदान के बाद स्थानीय लोगों ने पहली बार देखा

बूंदी। शहर के छत्रपुरा रोड स्थित ऐतिहासिक छतरी वाली बावड़ी, जो वर्षों से घनी झाड़ियों, कंटीली वनस्पतियों और गंदगी के बीच पूरी तरह छिपी हुई थी, अब रामेष्ट युवा मंडल संस्थान, बूंदी के तीन दिवसीय अथक श्रमदान के बाद अपने वास्तविक स्वरूप में सामने आई है। संस्थान के इस प्रयास ने न केवल एक उपेक्षित ऐतिहासिक धरोहर को नई पहचान दी, बल्कि स्थानीय लोगों को भी अपनी ही विरासत के दर्शन करने का अवसर दिया।

अभियान की शुरुआत में आसपास के लोगों से जानकारी मिली थी कि इस स्थान पर कभी एक बावड़ी हुआ करती थी। लेकिन जब संस्थान के सदस्यों ने झाड़ियों और कचरे को हटाने का कार्य शुरू किया, तो सामने एक खूबसूरत बावड़ी मिली, जिसके ठीक ऊपर एक आकर्षक छतरी बनी हुई है। बावड़ी की मूल संरचना आज भी काफी हद तक सुरक्षित है, हालांकि समय के साथ कुछ हिस्सों को नुकसान पहुंचा है।

इस अभियान की सबसे खास बात स्थानीय लोगों की प्रतिक्रिया रही। आसपास के लोगों ने बताया कि उनकी उम्र लगभग 40 से 50 वर्ष है, लेकिन उन्होंने अपने जीवन में इस बावड़ी को कभी इस रूप में नहीं देखा। उन्होंने हमेशा इसे घनी झाड़ियों, कांटों और गंदगी से ढका हुआ ही पाया था। संस्थान के सदस्यों द्वारा तीन दिनों तक किए गए लगातार श्रमदान के बाद जब यह धरोहर सामने आई, तो स्थानीय लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सदस्यों के प्रयासों की खूब सराहना की। कई लोगों के लिए यह पहली बार था जब उन्होंने इस ऐतिहासिक बावड़ी को उसके वास्तविक स्वरूप में देखा।

बावड़ी के ऊपर बनी छतरी भी अपनी विशिष्ट स्थापत्य कला के कारण विशेष आकर्षण रखती है। इसके गुंबद के नीचे पत्थरों को चतुर्भुजाकार आकृतियों में क्रमश: गहराई लेते हुए सजाया गया है, जोइसकीअनूठीबनावट को दर्शाता है। सफाई के दौरान छतरी के आसपास की झाड़ियों और वनस्पतियों को हटाकर इसकी खूबसूरती को भी सामने लाया गया।

इस स्थान के समीप ही सगस जी महाराज का स्थान भी स्थित है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार सगस जी महाराजलोकदे